Date 01
Page

डा० रंगोली चन्द्रा
एसोसिएट प्रोफेसर
समाज शास्त्र विभाग
लखनऊ विश्वविद्यालय
लखनऊ

विषय: प्रकार्यात्मक सिद्धान्त - Functional Theory.

प्रकार्यात्मक, समाज के अन्तर्सम्बन्धित भागों को एक ऐसी स्वाचालित व्यवस्था के रूप में देखने का सरल दृष्टिकोण है, जिसके निर्णायक भागों के सामाजिक सम्बन्धों में संरचना तथा एक वस्तुनिष्ठ नियमितता होती है। यह एक समाज शास्त्रीय परिप्रेक्ष्य है जो किसी सामाजिक तत्व, सांस्कृतिक प्रतिमान को दूसरे सामाजिक सांस्कृतिक तत्वों तथा सम्पूर्ण व्यवस्था के लिये उसके परिणामों के सन्दर्भ में ढूंढता है।

दुर्खीम ने प्रकार्यवाद के सामाजिक, सांस्कृतिक तत्व को अध्ययन सम्पूर्ण समाज एवं संस्कृति के सन्दर्भ में किया। उसके अनुसार प्रत्येक सामाजिक सांस्कृतिक तत्वों के सम्पूर्ण सामाजिक व्यवस्था के लिये कुछ प्रकार्य होते हैं। साथ ही, यह तत्व प्रकार्यात्मक आवश्यकता के आधार पर एक दूसरे से जुड़े होते हैं। ये अपने जीवन के लिये सम्पूर्ण व्यवस्था पर आधारित होते हैं। अनेक समाज शास्त्रियों ने प्रकार्यवाद की परिभाषा अपने शब्दों में की है मैलिनोवस्की ने प्रकार्यवाद को व्यक्तिवादी प्रकार्य कहा है और सांस्कृतिक तत्वों के प्रकार्य पर अत्यधिक बल दिया है। रेडक्लिफ ब्राउन के अनुसार, "प्रकार्य एक आंशिक क्रिया द्वारा उस सम्पूर्ण क्रिया को दिया जाने वाला योगदान है जिसका कि वह एक भाग है"

दुर्खीम के अनुसार, " समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति जिन गतिविधियों द्वारा होती है इन्हे ही प्रकार्य कहते हैं।"

मर्टन ने कहा है कि " प्रकार्य वे अवलोकित परिणाम है जो कि सामाजिक व्यवस्था के अनुकूलन या सामंजस्य को बढ़ाते है।

प्रकार्यवाद की विशेषताएँ

- प्रकार्य का सम्बन्ध सामाजिक संरचना का निर्माण करने वाली इकाइयों से है
- सभी कार्य प्रकार्य नहीं है केवल उन्ही कार्यों को प्रकार्य कहा जाता है जो समाज के द्वारा अपेक्षित होते है।
- प्रकार्य केवल क्रिया ही नहीं, बल्कि समस्त क्रियाओं का योग है।
- प्रकार्य एक जटिल अवधारणा है क्योंकि यह देखी नहीं जा सकती है।
- कभी-कभी प्रकार्य स्पष्ट एवं प्रकट होते है लेकिन कभी अप्रकट भी होते है।
- प्रकार्य का सम्बन्ध इकाइयों द्वारा समाज को दिये जाने वाले सकारात्मक योगदान से है।
- समाज मे प्रकार्यों की संख्या निश्चित नहीं होती है।

Date / /
Page 03

मैलिनोवस्की का प्रकार्यवाद

मैलिनोवस्की के अनुसार संस्कृति वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य अपने शारीरिक तथा मानसिक और अन्त में अपने बौद्धिक अस्तित्व को बनाये रखने में सफल होता है। मानव प्राणी शाकाहारी प्राणी होने के साथ एक सामाजिक प्राणी भी है। इन दोनों ही रूपों में उसकी अनेक शारीरिक मानसिक आवश्यकताएं हैं। इन आवश्यकताओं की पूर्ति किये बिना सामाजिक प्राणी के रूप में मानव का अस्तित्व कभी बना नहीं रह सकता है। इन्हीं आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये मनुष्य संस्कृति का निर्माण करता है। इनके द्वारा मनुष्य अपनी शारीरिक, मानसिक, तथा बौद्धिक अस्तित्व को बनाये रखता है। किसी भी सांस्कृतिक तत्व का अस्तित्व इसी बात पर निर्भर करता है कि वह मानव के किस काम आ रहा है या नहीं यही मैलिनोवस्की का प्रकार्यवाद है।

मैलिनोवस्की ने उद्विकासवाद, प्रसारवाद के विरोध में अपने सांस्कृतिक प्रकार्य की अवधारणा का प्रतिपादन किया है। इन्होंने सांस्कृतिक व्यवस्था को समझाने के लिये प्रकार्यवाद का सहारा लिया है। इनके अनुसार मानव और पशु में प्रमुख अन्तर यह है कि मानव के पास संस्कृति है और इस संस्कृति का निर्माण उसने अपनी अनेक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये किया है। इस लिये इस सिद्धान्त को आवश्यकता सिद्धान्त कहा जाता है।

मैलिनोवस्की के अनुसार मनुष्य की सात आधारभूत आवश्यकताएं हैं

Date...../....../......

Page.................

I शरीर V गति
II प्रजनन VI वृद्धि
III शारीरिक आराम VII स्वास्थ्य
IV सुरक्षा

इन सातो आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये मानव ने संस्कृतियों का निर्माण किया है। इनमें से प्रत्येक आवश्यकता की पूर्ति मानव निर्मित विभिन्न सांस्कृतिक तत्वों के द्वारा होती है। इन सांस्कृतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के साधन प्रत्येक समाज में एक से नहीं होते है बल्कि प्रत्येक समाज में इन सांस्कृतिक तत्वो के प्रकार तथा स्वरूप अलग-अलग होते है। प्रत्येक समाज के सांस्कृतिक ढांचे का स्वरूप कुछ भी हो लेकिन मानव की सात महत्वपूर्ण शारीरिक, मानसिक आवश्यकताओ की पूर्ति प्रत्येक संस्कृति में पाई जाती है।

मैलिनोवस्की का मानना था कि संस्कृति का कोई भी तत्व या इकाई ऐसी नहीं हो सकती है जो प्रकार्य हीन हो। संस्कृति का प्रत्येक तत्व किसी न किसी कार्य को करने के लिये अस्तित्व में है, और उसका अस्तित्व उसी समय तक बना रहता है जब तक वह सम्पूर्ण व्यवस्था में कोई कार्य करता है। सम्पूर्ण जीवन व्यवस्था को बनाये रखने में प्रत्येक सांस्कृतिक तत्व का कुछ न कुछ प्रकार्य होता है इसलिये संस्कृति के प्रत्येक तत्व का दूसरे तत्व के साथ आन्तरिक व प्रकार्यात्मक सम्बन्ध होता है जिसके फलस्वरूप ये असंख्य सांस्कृतिक तत्व एक दूसरे से अलग नहीं बल्कि एक दूसरे से सम्बन्धित होते है।

मैलिनोवस्की के प्रकार्यवाद का प्रमुख दोष यह है कि उन्होंने मनुष्य की आवश्यकताओं व इच्छाओं का खण्डन मान लिया है।